धर्मायण

Title Code- BIHHIN00719

1. वैदिक विष्णु के स्वरूपों का विमर्श
—श्री अरुण कुमार उपाध्याय 4

2. "गीता सुगीता कर्तव्या"
—आचार्य किशोर कुणाल 18

3. पाञ्चरात्र-साहित्य में वैष्णव-भक्ति
—श्री महेश प्रसाद पाठक 27

4. पाञ्चरात्र-साहित्य का विस्तार
—डॉ. काशीनाथ मिश्र 31

5. आदि शंकराचार्य कृत 'विष्णुषट्पदीस्तोत्र' में दार्शनिक सिद्धान्त
—डॉ सुदर्शन श्रीनिवास शाण्डिल्य 37

6. उपासना पद्धति में पाञ्चरात्र-सिद्धान्त
—डॉ. लक्ष्मी कान्त विमल 41

7. भागवतागम की विषयवस्तु
—श्री धनञ्जय कुमार झा 44

8. वैखानस सम्प्रदाय: एक दृष्टि
—पं. मार्कण्डेय शारदेय 47

9. अध्यात्म रामायण से रामकथा
—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी 52

10. प्राचीनतम वैष्णव-स्थापत्य
—डॉ. श्रीकृष्ण "जुगनू" 56

11. विष्णु की शास्त्रीय-मूर्ति का स्वरूप
—डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह 'संजय' 60

12. दक्षिण एवं उत्तर की मूर्ति-कलाओं का समन्वय
—डॉ. सुशान्त कुमार 63

अन्य सभी स्थायी स्तम्भ 78

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखक के हैं। इनसे सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हम प्रबुद्ध रचनाकारों की अप्रकाशित, मौलिक एवं शोधपरक रचनाओं का स्वागत करते हैं। रचनाकारों से निवेदन है कि सन्दर्भ-संकेत अवश्य दें।

धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की पत्रिका

अंक 101
अग्रहायण, 2077 वि. सं.
1 दिसम्बर- 30 दिसम्बर, 2020ई.

प्रधान सम्पादक
आचार्य किशोर कुणाल

सम्पादक
भवनाथ झा

पत्राचार:
महावीर मन्दिर,
पटना रेलवे जंक्शन के सामने
पटना- 800001, बिहार
फोन: 0612-2223798
मोबाइल: 9334468400
E-mail:
dharmayanhindi@gmail.com
Website:
www.mahavirmandirpatna.org/dharmayan/
Whatsapp:
9334468400

मूल्य : 20 रुपये

पाठकीय प्रतिक्रिया

(अंक संख्या 100, कार्तिक, 2077 वि.सं.

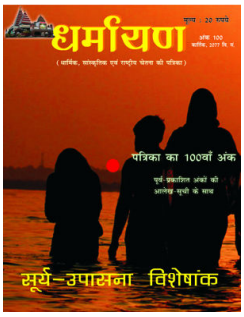

धर्मप्राण 'धर्मायण' अपने धर्म 'धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना' के अनुरूप सज्जाओं में हम पाठकों के समक्ष नित्य नूतनता एवं प्रांजलता के साथ प्रस्तुत होता रहा है। मनीषी विद्वज्जनों एवं अध्येताओं के आलेख इसे सदैव माननीय एवं संग्रहणीय बनाते रहे हैं। शोधधर्मी विद्याव्यसनी विद्वान पंडित भवनाथ झा के संपादन कौशल एवं गहन तथ्यान्वेषण प्रवृत्ति से यह उत्तरोत्तर अधिकाधिक प्रयोगात्मक एवं प्रामाणिक स्वरूप ग्रहण कर रहा है। प्रत्येक अंक विशेषांक होने से यह विषय विशेष के पिपासुओं के लिए अमृततुल्य सिद्ध होगा।

वर्तमान अंक के सूर्य उपासना से सम्बन्धित विविध आयामों इतिहास, मन्त्र, उपासना पद्धतियों, लोकमत, गीत आदि के तथ्यपरक आलेखों से अलंकृत होने के कारण इसकी उपादेयता शब्दातीत है।

अबतक के सभी अंकों में प्रकाशित आलेखों की सूची से यह अंक धर्मायण के नये पाठकों की पूर्व के अंकों के प्रति उत्सुकता जगाएगा। विश्वास है कि आगामी 'वैष्णव उपासना अंक' भी यथासमय हमें पूर्ववत् ज्ञानानंद से आप्लावित करेगा। इत्यलम्

अरविन्द मानव, श्रीराधा-कृष्ण ठाकुरबाड़ी
विष्णुधाम, सामस
9931434244

आपके हस्तकमल के सम्पादकीय प्रकाश से प्रकाशित 'धर्मायण' का यह सौवाँ अङ्क निश्चय ही मील के पत्थर के रूप दूर से ही दृष्ट होगा। इतनी लम्बी और स्वेदरहित यात्रा के लिए सभी विद्वान् लेखकों, सारस्वत-सम्पन्न सम्पादकों तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष धर्मसेवी भक्तजनों को सादर नमन एवं शुभकामनाएँ।

महेश प्रसाद पाठक,
बरगण्डा, पो- जिला-गिरिडीह,
(815301), झारखण्ड

आपको यह अंक कैसा लगा? इसकी सूचना हमें दें। पाठकीय प्रतिक्रियाएँ आमन्त्रित हैं। इसे हमारे ईमेल dharmayan-hindi@gmail.com पर अथवा ह्वाट्सएप सं- +91 9334468400 पर भेज सकते हैं।

'धर्मायण' का अगला अंक **खरमास विशेषांक** के रूप में प्रस्तावित है। पौषमास से सम्बन्धित आलेख आमन्त्रित हैं। समाज में पौषमास को लेकर फैली हुई भ्रान्तियों को दूर करने के लिए यह अंक प्रस्तावित है।

धर्मायण का सौवाँ अंक देखा। सूर्य-विशेषांक के रूप में प्रकाशित यह अंक इस वर्ष के सभी विशेषांकों की तरह आकर्षक लगा। सनातन धर्म से सम्बन्धित एक केन्द्रीय विषय पर सभी लेखों प्रकाशित हो रहे हैं, इसके लिए साधुवाद। इस कोरोना संकट में यह पत्रिका नियमित रूप से ऑनलाइन निकल रही है, यह भी प्रसन्नता का विषय है, किन्तु इसे समय ठीक होने पर प्रकाशित कर लेना भी आवश्यक होगा।, क्योंकि हम-जैसे लोग जो कम्प्यूटर या मोबाइल पर नहीं पढ़ सकते हैं, उनके लिए पत्रिका सुलभ हो पायेगी। ये सारे अंक चूँकि स्थायी महत्त्व के हैं, अतः कभी भी प्रकाशित होने पर नवीन ही बने रहेंगे।

इस अंक में पूर्व-प्रकाशित सभी लेखों की अनुसूची प्रकाशित की गयी है, वह एक ठोस कार्य है। इससे न केवल पत्रिका की गरिमा बढ़ी है, अपितु यह भविष्य में शोधार्थियों के एक मार्गदर्शक साबित होगा।

इस अंक के प्रकाशन के लिए बहुत बहुत बधाई

डा. एस.एन.पी. सिन्हा
पूर्व-कुलपति, पटना विश्वविद्यालय